18–5–67 ओमशांति रात्रीक्लास

बच्चे अपना अनुभव सुनाते हैं कि कहां तक हम पहुंचे हैं। इसको फुरना कहा जाता है कि हम कर्मातीत अवस्था में कहां तक पहुंचें। बाबा की याद में कहां तक रहते हैं। कहां तक खुशी है। तुम जानते हो कि वो साजन है,हम सजनियां हैं। हमारा बहुत श्रृंगार कर रहे हैं। तो खुशी रहनी चाहिए ना। यह तुम बच्चों का डबल पियर घर है। बाबा भी डबल ओमशांति कहते हैं। एक रुहानी बाप ,दूसरा जिस्मानी बाप। तुमको जैसे कि डबल इंजन मिली हुई है। वो सुप्रीम वो सेकेंड नम्बर में। सुप्रीम परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा पढ़ाते हैं। तो .....भी पढ़ाते हैं। यह भी बच्चे समझते हैं कि इन जितना रहमदिल बाप कोई गाया हुआ नहीं है। अभी पता पड़ा है कि बाप आकर बच्चों को बेहद की बादशाही देते हैं। बेहद की बादशाही बेहद के ही बाप द्वारा मिलती है। यह बच्चों को भूलना नहीं चाहिए। यह याद की यात्रा है। याद करते2 शांतिधाम,सुखधाम को पहुंचना है। वो मेले–मलाखड़े तो थोड़ा चलकर बंद हो जाते हैं। यह तो चलता ही रहता है। बाप आया ,मेला शुरू हुआ। युद्ध चलती ही रहेगी जब तक बाप है। यह है अविनाशी पढ़ाई जो कि एक बाप ही पढ़ाते हैं। तुम जानते हो कि हम ससुर घर जा रहे हैं। पियर घर गरीब है। ससुर घर बहुत साहुकार है। जानते हो कि हम इस पढ़ाई से वैकुंठ के मालिक बन रहे हैं। उंच ते उंच बाप पढ़ाते हैं तो फिर खुशी क्यों नहीं रहनी चाहिए। घर में बैठे भी बाप को याद कर सकते हो और बिल्कुल प्योर मीठा बनना है। कोई को भी मन्सा, वाचा ,कर्मणा दुःख नहीं देना है। देहअभिमान में आने पर खिटपिट होती है। सर्विस को भी धोखा आ जाता है। जबकि बाप आये हैं तो यह तो बड़ी चांस है। बाप को आधा कल्प से याद किया है। अब वो मिला। बड़ी सिक से पढ़ते हैं। याद करते हैं। मिलते हैं। और जिस्मानी बाप का प्यार तो मानो की मार है। .....बाप का प्यार सच्चा प्यार है। वो तो गिराते ही रहते हैं। सबसे जास्ती गिरावट होती ही है काम महाशत्रु से। तुम बच्चों को तो शादी करनी ही नहीं है। मृत्युलोक अब अंतिम घड़ी पर है। इसलिए पवित्र और खुशी में बहुत रहना है। जिनको धन होता है वो खुशी में बहुत रहते हैं। तुम तो 21जन्मों के लिए स्वर्ग के मालिक बनते हो। तुम्हारी मुसाफिरी है मूलवतन और सुखधाम तरफ। तुम्हारा विलायत है स्वर्ग। वहां के लिए भी पासपोर्ट चाहिए। पासपोर्ट उनको मिलता है जो याद से पवित्र रहते। उनको तो आटोमेटिकली ही मिल जाता है। तुम पढ़ते हो तो अपना सौभाग्य बनाते हो। पढ़ाई मिस नहीं करनी चाहिए। हम गॉड फादरली स्टुडेंट हैं यह भूल जाते हो?बांधेलियां औरों से जास्ती शिवबाबा की याद में रहती हैं। जितना जास्ती याद करेंगे उतने बंधन कटते जावेंगे। चतुराई चाहिए। छोटा बच्चा कहेगा फिल्म देखने जावें?मां–बाप छुट्टी नहीं देंगे। रोवेगा जाउं?अच्छा, जाओ ,चले जाओ। छुट्टी दे देंगे। तुम्हारा एक गीत भी बना हुआ है कि छुट्टी दो तो हम जावें। बच्चे जानते हैं कि बाप वशीकरण मंत्र दे रहे हैं। राजयोग से और स्वदर्शन चक्रधारी बनने पर तुम अपने आप को ही राजतिलक दे देते हो। बाप श्रीमत देते हैं यह उनकी मदद हे। ऐसे नहीं कि आशीर्वाद करो। पढ़ाई में टीचर से कृपा आशीर्वाद मांगना भूल है। यहां भी ऐसे ही है। बाप पढ़ा रहे हैं। पढ़ना तुम्हारा काम है। यह ज्ञान है सेकेंड का। बाप तो सिर्फ कहते हैं कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। यह है मनमनाभव। हम तो याद करते हैं कोई मंत्र नहीं जपते हैं। बाबा बहुत युक्तियां बताते हैं। शंकराचार्य जैसे एक को जगाया तो तुम्हारा नाम बाला हो जावेगा कि वाह ब्र.कु.कु. ने तो शंकराचार्य को भी जगा दिया है। बाबा अगर छोटी कुमारी होती तो इतना ज्ञान होता तो फट जाकर समझाती। इस समय का तो शंकराचार्य बादशाह है। उनको जीता तो प्रजा को जीत लिया। ऐसे2 खयाल करते ही रहो। मल्लयुद्ध होती है तो अंदर2 में खयालात चलती रहती है कि कैसे ,कहां से उंगली लगाउं?विनाश का समय जब पास आवेगा तो उस समय रिजल्ट निकलेगी। तुम्हारी अभी घोड़ा दूर है। यह ह्यूमन रेस है ना। अब नाटक पूरा होता है। बाबा आया है लेने लिए। हम ना इस शरीर में ना इस दुनियां में रहना चाहते हैं। ऐसे2 अपने साथ बातें करनी होती हैं। गुड नाइट।